प्रातः क्लास 4-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 बच्चों को यह तो निश्चय जरूर है कि हमारा बेहद का बाप है। उनको कोई बाप नहीं है। दुनिया में ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जिसको बाप न हो। एक एक बात बड़ी अच्छी समझने की है। और फिर नालेज भी वह सुनाते हैं जो कब पढ़ते नहीं हैं। नहीं तो मनुष्य मात्र सभी कुछ न कुछ पढ़ते जरूर हैं। कृष्ण भी पढ़ा है। बाप कहते हैं मैं क्या पढ़ा हूं। मैं तो पढ़ाने आया हूं। मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। मैं ने कोई से शिक्षा नहीं ली है। कोई गुरु नहीं किया है। ड्रामा अनुसार बाप की जरूर ऊंच ते ऊंच महिमा होगी। गाया भी जाता है ऊंच ते ऊंच भगवान। उन से ऊंचा फिर क्या होगा। न बाप न टीचर न गुरु। यह स्वयं ही बाप टीचर गुरु है। यह तो अच्छी रीत समझ सकते हो ऐसा कोई भी व्यक्ति हो नहीं सकता। यही वन्डर आफ्टर ऐसे वन्डर फुल बाप और टीचर, सद्गुरु को याद करना चाहिए। मनुष्य कहते भी हैं ओ गाड फादर। वह नालेज-फुल टीचर भी हैं। सुप्रीम गुरु भी हैं। एक ही हैं। ऐसा दूसरा कोई मनुष्य मात्र नहीं होगा। उनका पढ़ाना भी मनुष्य तन में है। बाबा तो जरूर चाहिए। यह भी बच्चों को घड़ी2 स्मृति में रहे। तो भी बेड़ा पार हो जाये। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। सुप्रीम टीचर समझाने से सारा ज्ञान बुद्धि में आ जावेगा। वह सद्गुरु भी हैं। हमको योग सिखला रहे हैं। एक के साथ ही योग लगाना है। सभी आत्माओं का एक ही फादर है। सभी आत्माओं को कहते हैं मामेकं याद करो। आत्मा ही सभी कुछ करती है। इस शरीर रूपी मोटर को चलाने वाली आत्मा है। इनको रथ कहो वा कुछ भी कहो मुख्य चलाने वाली आत्मा है। आत्मा का बाप एक ही है। मुख से कहते भी हो हम भाई2 हैं। एक बाप के बच्चे हम आत्मायें भाई2 हैं। फिर जब बाप आते हैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में तो भाई-बहन होना पड़ता है। प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली तो भाई-बहन होंगे। और फिर यह है एडाप्टशन। भाई-बहन। भाई से बहन की कब शादी नहीं होती। निषेध है। तो यह सभी प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियां हो गई। तो भाई-बहन समझने से जैसे कि बाप की लवली चिल्ड्रेन्स ईश्वरीय सम्प्रदाय हो गये। तुम कहेंगे हम सभी ईश्वरीय सम्प्रदाय। डायरेक्ट ईश्वर बाबा सभी कुछ हमको सिखला रहे हैं। यह कोई से सीखा हुआ नहीं है। वह तो है ही सदैव सम्पूर्ण। उनकी कलायें कम वा जास्ती नहीं होती। और सभी की कलायें कम और जास्ती होती हैं। ब्रह्मा की, विष्णु की भी होती हैं। बाकी शंकर को तो शिव से मिला देते हैं। हम तो शिव की बहुत बड़ी महिमा कर रहे हैं। शिव बाबा कहना बड़ी सहज है। और आप ही पतित पावन हैं। सिर्फ ईश्वर कहने से इतना जंचता नहीं है। अभी तुम बच्चों के दिल में जंचता है। बाप कैसे आकर पतितों को पावन बनाते हैं। एक ही बाप पतित पावन है। दूसरा कोई है नहीं। लौकिक बाप भी है पारलौकिक बाप भी हैं। पारलौकिक बाप को सभी याद करते हैं। क्योंकि पतित हैं तब तो याद करते हैं। पावन बन गये फिर तो दरकार ही नहीं है। पतित पावन को बुलाने को। ड्रामा देखो कैसा है। पतित पावन बाप को याद करते हैं। चाहते हैं हम पावन दुनिया के मालिक बनें। पतित को कहा जाता है भ्रष्टाचारी। आसुरी। शास्त्रों में दिखाया है देवताओं और असुरों की लड़ाई लगी। परन्तु ऐसे तो नहीं है। अभी तुम समझते हो हम न असुर हैं न देवता हैं। हम अभी हैं बीच के। बीच कुश कहा जाता है ना। सभी तुमको कोशते रहते हैं। यह खुल बड़ा हो गये का है। नाटक में मजा ही देखते हैं। वह सभी हैं हद के ड्रामा। उनको और कोई नहीं जानते। देवतायें तो जान भी न सकें। अभी तुम कलियुग से निकल आये हो। जो खुद जानते हैं वह औरों को भी समझा सकते हैं। एक बार ड्रामा देखा तो फिर सारा ड्रामा बुद्धि में आ जावेगा। बाबा ने समझाया है यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। इनका बीज ऊपर में है। तुम समझते हो यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। वैराइटी कहते हैं ना। बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है शिव बाबा कोई आया होगा। जब कि उनका कोई टीचर ही नहीं तो फिर भाषा कैसे सीखा होगा। तो जरूर जिस रथ उनको भाषा ही काम में लायेंगे। उनकी अपनी भाषा कोई है नहीं। वह कुछ भी पढ़ते सीखते

उनका कोई टीचर होता ही नहीं। कृष्ण तो सीखता है। उनके मां बाप टीचर हैं। उनको गुरु की तो दरकार ही नहीं। क्योंकि उनको तो सदगति मिली हुई है। यह भी तुम जानते हो। तुम ब्राह्मण हो सभी से ऊंचे। यह तुम स्मृति में रखो। हमको पढ़ाने वाला है बाप। हम अभी ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण, देवता क्षत्री वैश्य शूद्र कितना क्लीयर हैं। बाप को तो पहले से होक ह देते हैं कि वह सभी कुछ जानते हैं। क्या जानते हैं यह किसको भी पता नहीं। वह नालेजफुल है अर्थात ज्ञान का सागर है। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का उनको नालेज है। बीज को सारे झाड़ की नालेज होती है। वह तो है जड़ बीज। तुम जान सकते हो बीज से आम का झाड़ कैसे निकलता है। जड़ बीज तो बोल न सके। तुम हो चैतन्य। तुम अपने झाड़ का नालेज समझाते हो। बाप कहते हैं मैं हूं इस वैराईटी मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। है तो सभी मनुष्य ही। परन्तु वैराईटी है। एक भी आत्मा के शरीर के फिचर्स न मिलें दूसरे से। दो एक्टर्स एक जैसे हो न सकें। यह है बेहद का ड्रामा। हम मनुष्यों को एक्टर्स नहीं कहते हैं। आत्मा को कहते हैं। वह मनुष्य मनुष्य को ही एक्टर्स समझते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है कि आत्मा एक्टर्स है। वह मनुष्य से डांस कराते हैं। वह भी आत्मा है। जो मनुष्य को डांस कराती है। पार्ट बजाती है। यह तो बड़ी सहज समझने की बातें है। बेहद का बाप आते भी जरूर हैं। ऐसे नहीं कि नहीं आते हैं। जयन्ती भी होती है। बाप ह्रि× आते ही हैं तब जब न पुरानी दुनिया बदली करनी होती है। भक्ति मार्ग में कृष्ण को याद करते रहते हैं। परन्तु कृष्ण आवे कैसे= कलियुग में। इस संगम पर तो कृष्ण का रूप इन आंखों से देखा नहीं सकते। फिर उनको भगवान कैसे कहें। वह तो सतयुग का पहला नम्बर का प्रिन्स है। उनको बाप टीचर भी है। गुरु की उनको दरकार नहीं। क्योंकि सदगति में हैं। स्वर्ग को सदगति कहा जाता है। हिसाब भी क्लीयर है। बच्चे× मनु= बच्चे समझते हैं मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। सभी नहीं लेते हैं। कौन2 कितना जन्म लेते हैं वह तुम हिसाब करते हो। डीटी धराणा जरूर पहले2 आती है। पहला नम्बर उनका ही होता है। एक का दुना तो उनके पिछाड़ी भी आ जाते हैं। यह सभी बातें तुम ही जानते हो। तुम्हारे में भी कोई अच्छी रीत समझते हैं। जैसे उस पढ़ाई में भी होता है। यह है भी बहुत सहज। सिर्फ एक डिफीकल्टी× गुप्त है। तुम बाप को याद करते हो इसमें माया विघ्न डालती है। क्योंकि माया रावण को हसद ऋ होता है। तुम राम को याद करते तो रावणको हसद होताहै। हमारा मुरीद राम को क्यों याद करता है। यह भी ड्रामा में पहले से ही नूंध है। नई बात नहीं। कल्प पहले जो पार्ट बजाया है वही बजावेंगे। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है वही अब अभी कर रहे हैं। यह चक्र फिरता आता है। यह बन्द नहीं होता। टाईम की टिक होती ही रहती है। बाप समझाते हैं यह 5000 वर्ष का ड्रामा है। शास्त्रों में तो क्या2 बातें लिख दी है। भक्ति मार्ग के लिए यह सभी झूठी किताबें आद बनाई है। मनुष्य समझते हैं भक्त लोग बहुत अच्छा काम करते हैं बाप समझाते हैं भक्तों में भी अच्छे वा बूरे होते हैं। परन्तु उनको भी तो नीचे उतरना ही पड़ता है। भक्ति करना ही दुर्गति। तुम बच्चों ने सीढ़ी के राज को अच्छी रीत समझा है। अभी तुम समझते हो बराबर भक्ति अव्यभिचारी मार्ग है। भक्त वा लोगों को यह मालूम नहीं पड़ता है। नहीं तो भक्ति को छोड़ दें। भक्ति छुड़ाने बाप आते हैं। सो भी ऐसे कब नहीं कहेंगे तुम यह भक्ति न करो। क्योंकि अगर यहां भी न चल सके और छूट जावे तो न इधर का न उधर का रहे। कोई काम का न रहा। इसलिए तुम देखते हो कई मनुष्य ऐसे भी हैं जो भक्ति आद नहीं करते हैं। बस ऐसे ही चलता रहता है। भगवान ही अनेक रूप धरते हैं। और यह बेहद का अनादी बना बनाया ड्रामा ऐ= का खेल है। जो रिपीट होता रहता है। इसलिए उनको अनादी वर्ल्ड ड्रामा कहा जाता है। इसको भी तुम बच्चे ही समझ रहे हो। इसमें भी तुम कुमारियों के लिए तो ही सहज है। माताओं को तो फिर जो सीढ़ी चढ़ी है वह उतरना पड़े। कुमारी को तो और कोई सम्बन्ध चिन्तन ही नहीं। बाप का बन जाना है। लौकिक सम्बन्ध को भूल पारलौकिक सम्बन्ध जोड़ना है। यह तो

जानते हैं कलियुग में है ही दुर्गति। क्वांति भाना तमोप्रधान। नीचे उतरना ही है ड्रामा अनुसार। भारतवासी कहते भी हैं यह सभी कुछ ईश्वर का है। वह मालिक है। तुम कौन हो? हम आत्मा हैं। बाकी यह सभी ईश्वर का है। यह देह आदि जो कुछ है परमात्मा ने दिया है। मुख से कहते हैं ठीक है यह सभी कुछ ईश्वर ने दिया है। अच्छा फिर उनकी दी हुई चीज़ में ख्यानत थोड़ी ही डालनी चाहिए। परन्तु इस पर चलते नहीं हैं। बाप कहते हैं रावण मत पर चल पड़ते हैं। बाप समझाते हैं तुम तो ट्रस्टी हो। परन्तु रावण सम्प्रदाय होने कारण ट्रस्टी पने में भी अपने को धोखा देते हैं। मुख कहते एक हो, करते दूसरा हो। बाप ने चीज़ दी और तो उसमें तुमको दुःख क्यों होता है। ममत्व मिटाने के लिए यह बातें बाप अपने बच्चों को समझाते हैं। अभी बाप आये हैं। तुम ने ही पुकारा है बाबा आकर हमको साथ ले चलो। हम रावण राज्य में बहुत दुःखी हैं। आकर हमको पावन बनाओ। क्योंकि समझते हैं पावन बनने बिगर हम जा नहीं सकते। हमको ले जावेंगे कहां? धाम ले चलो। सभी कहते हैं हम घर जावेंगे। कृष्ण के भक्त चाहते हैं कृष्णपुरी वैकुण्ठ में जावें। सतयुग ही याद रहता है। प्यारी चीज़ है ना। मरते हैं तो कोई स्वर्ग जाता नहीं। स्वर्ग तो सतयुग में ही होता है। कलियुग में होता है नर्क। तो जरूर पुनर्जन्म जन्म नर्क में ही होगा। यह कोई सतयुग थोड़े ही है। वह तो वन्डर आफ वर्ल्ड है। कहते हैं समझते भी हैं फिर भी कोई मरता है तो उनके सम्बन्धी आदि कुछ भी नहीं समझते हैं। बाप के पास तो 84 के चक्र की सारी नालेज है। वह एक बाप ही दे सकते हैं। दूसरा न कोई। तुम जो अपने को देह समझते थे वह रांग था। अभी बाप कहते हैं देही अभिमानी भव। कृष्ण तो कह न सकें देही अभिमानी भव। उनको तो अपनी देह है ना। शिव बाबा को अपना देह नहीं है। यह तो उनका रथ है जिसमें विराजमान हुये हैं। उनका भी रथ है इनका भी रथ है। इनकी अपनी आत्मा भी है। बाबा का भी लोन लिया हुआ है। बाप कहते हैं मैं इनका आधार लेता हूं। अपना तो है नहीं। तो पढ़ावेंगे कैसे। बापरोज बैठ बच्चों को खेंचते हैं। कि अपने को आत्मा समझो और बाप को देखो। यह शरीर भी भूल जाओ। हम तुमको देखें, तुम हमको देखो। तुम जितना बाप को याद देखेंगे पवित्र होते जावेंगे। और कोई उपाय पावन होने का है नहीं। अगर हो तो बताओ। जिससे आत्मा पवित्र होती हो। गंगा के पानी से तो नहीं होंगे। वह तो धक्के खाने की चीज़ है। भक्ति मार्ग में भिन्न2 में भगवान को खोजते हैं। देवताओं में भी ढूंढा कि शायद मिल जाये। परन्तु मिला किसको भी नहीं। किसको भी पता नहीं है। पहले2 तो कोई को भी बाप का ही परिचय देना है। ऐसा बाप तो और कोई होता नहीं। नब्ज देखो ऐसा समझाओ। वह जो एकदम चकित हो जावे। समझे कि बराबर उनको परमात्मा कहा जाता है। अभी तुम बच्चों को अपना परिचय दे रहे हैं। मैं कौन हूं। यह भी बच्चों को लालूप कैलरूटी रिपीट होती है। जो इस कुल के होंगे वही आवेंगे। बाकी तो सभी अपने धर्म में चले जावेंगे। जो और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं वह फिर निकल अपने2 सेक्शन में आ जावेंगे। इसलिए निराकारी आदि भी दिखाया है। यह बातें तुम बच्चे ही समझते हो। बाकी तो कोई तो मुश्किल ही समझेंगे। 7/8 से कोई निकलेंगे। जो समझेंगे वह नालेज तो बहुत अच्छी है। यहां का नज़ारा जो होगा। उनको तूफान आवेंगे। फिर दिल होगी फिर जावें जाकर सुनें। कई तो संग के रंग भी रंग जाते हैं। तो फिर आते ही नहीं। जहां पार्टी को जाता हुआ देखेंगे तो उसमें लटक पड़ेंगे। मेहनत लगती है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। घड़ी2 कहते हैं हम भूल जाते हैं। मैं आत्मा हूं। शरीर नहीं। वह घड़ी2 भूल जाते हैं। बच्चे काग चिड़ा पर बैठ काले बन पड़े हैं। इसलिए कौवे बन गये हैं। उनको ही बाप पढ़ा कर फिर हंस बोरा सुन्दर बनाते हैं। सभी मनुष्यों को शाम से सुन्दर-सुन्दर होना ही पड़ता है। कहते हैं हमारे सभी बच्चे जल भरे हैं। यह बेहद की बात है। 500 करोड़ बच्चे (आत्मा) हमारे घर में रहने वाले हैं। अर्थात् ब्रह्मलोक में रहने वाले हैं। बाप तो बेहद में खड़े हैं ना। तुम भी बेहद हो जावेंगे। सारा आत्मा घर के चला जावेगा। फिर तुम राज्य करेंगे। बाकी मनुष्य शान्तिधाम चले जावेंगे। बच्चों को बुड्ढा नेग और नमस्ते। **:****:*